अंक 8, कुल पृष्ठ 16 | जो उपहास विरोध पचाते वो ही नया कार्य कर पाते | मूल्य :मात्र 10 रुपए मास अगस्त 2013

2 अप्रैल से 19 जुलाई 2013 तक भगवान श्री कल्कि की 15 छावनियों की स्थापना

भगवान श्री कल्कि श्री अग्रोहा धाम में सपरिवार विराजे 8

महालक्ष्मी ने जब पासा पलटा देखें ग्यारह का कमाल 9

झलकियाँ 5

अग्रोहा धाम मेरा अदभुत मंदिर होगा 2

5 कंटक स्नान

देखें 4^2 का कमाल 13

15 कल्कि बाल वाटिका संयुक्त परिवार की ओर

1. विंध्याचल, मिर्जापुर 12 मई 2013
2. अन्न क्षेत्र कांशी 13 मई 2013
3. दशाश्वमेध घाट, बड़ी सीतला माँ 13 मई 2013
4. शोवा बाजार कोलकाता 29 अप्रैल 2013
5. रोहिणी सैक्टर-7 16 मई 2013
6. मुक्तेश्वर, नैनीताल 29 अप्रैल 2013
7. असरोही, यू.पी. 2 अप्रैल 2013
8. बहादुरगढ़, हरियाणा 14 अप्रैल 2013
9. घंटाघर, सब्जी मंडी दिल्ली 13 अप्रैल
10. ग्रीन पार्क, नई दिल्ली 10 जुलाई 2013
11. सिरसा, हरियाणा 10 जुलाई 2013
12. छिपीवाड़ा चांदनी चौक 14 जुलाई 2013
13. गगन विहार, दिल्ली 7 जुलाई 2013
14. विंध्याचल, कांशी 19 जुलाई 2013
15. अग्रोहा धाम, हिसार 17 जुलाई 2013

श्री कल्कि बाल वाटिका की कार्यशालाएं

दिल्ली विश्वविद्यालय	25 अगस्त
पटपड़गंज	4 अगस्त
यमुना विहार	4 अगस्त
पंजाबी बाग	25 अगस्त
गगन विहार	25 अगस्त
महावीर नगर	25 अगस्त
मॉडल बस्ती	4 अगस्त
नोएडा	25 अगस्त

अग्रोहा धाम मेरा अद्‌भुत मंदिर होगा

—संकलनकर्ता : सुनीता रातुसरिया सिरसा (0166-231312) संयोजक : मामाजी

(जून 2013 अंक में आपने रोहित गुप्त का स्वप्नानुभव "कल्कि जी की चाहत आपके जीवपर्यन्त राजा-रानी बने रहने की वरना कल्कि जी के सैनिक तो बने रहना" पढ़ा जब वह आर्किटेक्ट श्री राजीव गोयल व अन्य दिल्ली-सिरसा कल्कि बाल वाटिका के सदस्यों के साथ 5 जून 2013 को अग्रोहा पहुंचे तो उसी रात स्वपनानुभव में प्रभु श्री कल्कि ने उन्हें कहा **अग्रोहा धाम मेरा अदभुत मंदिर होगा।** प्रस्तुत है उसी संदर्भ में कुछ अंश :— 17 जुलाई 2013 को 27 एकड़ में फैले अग्रोहा धाम जो वैश्य वंश के महाराजा अग्रसेन की भूमि है वहां महाराजा अग्रसेन व उनकी कुलदेवी महालक्ष्मी के समीप महाविष्णु के अवतार भगवान श्री कल्कि की साढ़े पाँच फुट की मूर्ति की स्थापना पदमा जी, रमा जी, हनुमान जी व आद्याशक्ति माँ दुर्गा एवं रामावतार से उनके ध्यान में मग्न माँ वैष्णो सहित संपन्न हुई।

अग्रोहा धाम में जहाँ कल्कि जी की मूर्ति स्थापना होनी है कल्कि भवन का निरीक्षण-परीक्षण करते हुए दिल्ली सिरसा बाल वाटिका के सदस्य एवं आर्किटेक्ट श्री राजीव गोयल

महालक्ष्मी रूप में विराजीं मैया ने कल्कि भक्तों को अपने होने का आभास करवाया

12 जुलाई 2013 की सुबह सिरसा निवासी कल्कि भक्ता सुश्री सुनीता बंसल को स्वप्नानुभव में महालक्ष्मी मंदिर में ऊपर की सीढ़ी पर माँ बैठी हुईं दिखाई दीं (यह वही स्थान है जहाँ क्रेन से प्रभु श्री कल्कि की साढ़े पाँच फुट की मूर्ति की पेटी उठा कर 10 जुलाई 2013 को रखी गई थी) महालक्ष्मी सुनीता रातुसरिया (श्री कल्कि बाल वाटिका सिरसा की संरक्षिका) के पति श्री विमल रातुसरिया से कहती हैं **विमल तू मेरे नाखून में फंसे सूखे आटे व मैल को निकाल दे।** विमल भईया ने उसे सुई से निकालना शुरू किया तो दृष्टा (सुनीता बंसल) कहती हैं कि भइया, धीरे निकालो माँ को कष्ट होता है इस पर महालक्ष्मी जी झल्ला कर कहती हैं **तू चुप कर! इसके निकालने से मुझे सुकून मिल रहा है।**

यहाँ सीढ़ी पर बैठी माँ लक्ष्मी को जब नाखून से आटा निकालते हुए सुकून मिला

अर्थ : अग्रोहा धाम में लक्ष्मी जी नहीं महालक्ष्मी जी प्रतिष्ठित हैं। इन्हीं महालक्ष्मी ने महाराजा अग्रसेन को संपूर्ण राष्ट्र को शाकाहारीबनाने व दूसरों की जीविका का प्रबंध करने पर प्रसन्न होकर (माँ वैष्णो जो त्रिकुटा पर्वत पर बैठी हैं की तरह) यह वरदान दिया था कि तेरे कुल में हमेशा मेरा वास रहेगा। तब से महाराजा अग्रसेन ने महालक्ष्मी जी की पूजा अपनी कुलदेवी के रूप में शुरू की। दीपावली पर समस्त वैश्य समाज, व्यापारी वर्ग महालक्ष्मी की तन मन धन से पूजा करते हैं। अपने वायदे के अनुसार आज भी लेकिन अपने पति (महाविष्णु जो कलियुग में कल्कि रूप में आए हैं) के बिना वह वैश्य कुलों को धन धान्य से पल्लवित कर रही हैं। जब 10 जुलाई 2013 को महाविष्णु के अवतार भगवान श्री कल्कि की मूर्ति प्रतिष्ठित होने को वहाँ पहुँची तो मां खुशी से गद्‌गद्‌ हो गईं। अपने नाखूनों से सूखा आटा और मैल निकलवाने का अर्थ है कि बहुत समय हो गया वैश्य समाज की सेवा करते हुए। अब मेरे स्वामी महाविष्णु के अवतार श्री कल्कि यहाँ आ गए हैं। अब मुझे सुकून (चैन) मिलेगा जिन्हें विमल भैया ला रहे हैं अब केवल वैश्य समाज ही नहीं जो भी महाविष्णु एवं महालक्ष्मी जी को जो जितना मानेगा वह उतना ही धन धान्य धर्म वैभव से उसे फल देंगे।

मूर्ति स्थापना के दौरान हुए स्वप्नानुभव से मार्गदर्शन मिला

महाविष्णु के अवतारी भगवान श्री कल्कि की सहपरिवार मूर्ति पूजा आचार्य प्रभाकर शास्त्री जी ने अपने सहयोगियों के साथ शुरू करवाई। उसी रात स्वप्नानुभव में प्रमुख यजमान श्री विमल रातुसरिया की धर्मपत्नी सुश्री सुनीता रातुसरिया को महालक्ष्मी ने कहा मेरे स्थान पर बैठकर सबने पूजा तो की लेकिन मेरी पूजा नहीं की।

शास्त्री प्रभाकर मिश्रा श्री यमुना जी भवन गौरी शंकर मंदिर चांदनी चौंक दिल्ली

18 जुलाई को आचार्य प्रभाकर शास्त्री ने पूजा शुरू करवाई तो उन्हें मामाजी ने यह स्वप्नानुभव सुनाया। इस पर आचार्य जी ने गर्म शब्दों में दुर्गा जी के चित्र की तरफ इशारा करते हुए कहा ऐसा हो ही नहीं सकता मैंने सबकी पूजा करवाई है।

इस पर मामाजी ने मीठे शब्दों में कहा कि आचार्य जी आप विचार कीजिए कल्कि भगवान द्वारा दिए अनुभव गलत नहीं होते हैं। तीन चार मिनट बाद आचार्य जी ने पूजा में बैठे सभी जोड़ों के समक्ष मामाजी को संबोधित करते हुए कहा

(शेष पृष्ठ- 6 पर)

आओ प्रतिवर्ष की भांति चलें महाविष्णु के अवतारी की जन्मस्थली संभल धाम

मंदिर श्री कल्कि विष्णु

श्री कल्कि पदमा

भव्य गारुड़ी रथयात्रा सायं 4 बजे

*** कल्कि जी की महाज्योत के दिव्य दर्शन *माँ वैष्णो देवी का भव्य दरबार**
***हनुमान जी का दरबार *मुंबई का ढोल-ताशा * जादूगर गोगा के चमत्कार**

प्रिय साथियों, गौरी शंकर मंदिर में भगवान श्री कल्कि की जयन्ती एवं सहस्त्रार्चन करने के बाद लालकिले से ही बस एवं कारों द्वारा 11 अगस्त, 2013 को प्रातः 6 बजे श्रद्धालु कल्कि भक्त श्री कल्कि विष्णु मंदिर संभल के लिए प्रस्थान करेंगे।
बस मार्ग में पानी एवं नाश्ते की व्यवस्था पहले की ही तरह स्वयं की होगी। बस संभल में चामुंडा मंदिर में भक्तों को दर्शन कराते हुए आपके लिए निर्धारित विश्राम स्थल वाटिका बरेली सराय, कल्कि विष्णु मंदिर के समीप लेकर जाएगी। यहाँ पर श्री कल्कि जयंती महोत्सव समिती (हेल्प-लाइन : 8410370001, 9837155772) द्वारा आपके भोजन की व्यवस्था इस प्रकार है।

11 अगस्त 2013, रविवार

प्रातः अल्पाहार : प्रातः 7 से 10 बजे तक
प्रातः भोजन : दोपहर 12 से 3 बजे
संध्या अल्पाहार : सायं 5 से 7 बजे
रात्रि भोजन : रात्रि 9 से 11 बजे

12 अगस्त 2013, सोमवार

अल्पाहार : प्रातः 7 से 10 बजे
हवन, सत्संग संकीर्तन के बाद
प्रसाद भंडारा : दोपहर 1 बजे से 3 बजे तक

बस संभल से 12 अगस्त 2013 को 2:30 बजे दिल्ली के लिए रवाना होगी। रास्ते में गत वर्षों की भांति भोजन के पैकेट दिए जाएंगे। किराया प्रति भक्त प्रति सीट : मात्र 300 रुपए इच्छुक श्रद्धालु कल्कि भक्त बस अथवा कार से उपरोक्त सहूलियत लेना चाहें तो श्री मनोज पांडे (9212703815) से संपर्क करें। बस से जाने वाले श्री कल्कि भक्तों के लिए बुकिंग पहले आओ पहले पाओ के आधार पर है। कृप्या बाद में दवाब न डालें अपने वाहन की व्यवस्था करके स्वयं आएं। बुकिंग के लिए निम्न नंबरों पर रुपए देकर संपर्क कर सकते हैं।

सुश्री अलका गोयल- 0811281271 सुश्री पूजा गुप्ता- 9811858723 सुश्री राखी दीक्षित 9911109937
नोट : आखिरी के तीन संपर्क सूत्र श्री मनोज पांडे के अधीनस्थ हैं।

श्री कल्कि जयंती महोत्सव
दिनांक : 15 अगस्त 2013, वीरवार
स्थान : बड़ी धर्मशाला, कूचा पाती राम दिल्ली-6
कल्कि महाविष्णु यज्ञ : प्रातः 11 से 12 बजे
भंडारा : 12 से 2 बजे, संकीर्तन : 2 से 3 बजे
कल्कि बाल वाटिका के द्वारा रंगारंग कार्यक्रम : 3 से 5 बजे
श्रीकृष्ण-कल्कि लीला की सुंदर झांकी : 5 से 6 बजे

विशेष सत्संग-संकीर्तन
दिनांक : 18 अगस्त 2013, रविवार
स्थान : 43/1, राजपुर रोड, आई.पी. कॉलेज,
ट्रांस्पोर्ट अथॉरटी के आगे, दिल्ली
समय : दोपहर 3 बजे से रात्रि 8 बजे तक
प्रसाद (भोजन) : रात्रि 8 बजे से
प्रेषक : डॉ. वेद प्रकाश गुप्त, मामाजी (9312533445)

महाराजा अग्रसेन की उदार जीविका-शाकाहारी नीति से धन के भण्डार भरे रहेंगे

—संकलन : सुश्री संगीता गर्ग (9873349478) आभार : अग्रोहा विकास पत्रिका

प्यारे बच्चों- 17 जुलाई 2013 को अग्रोहाधाम में भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना हुई। भगवान श्री कल्कि की असीम कृपा से और हमारे पुण्यों के उदय से 21 जुलाई को हमें अग्रोहा धाम जाने का अवसर मिला। उस दिन वहाँ पर कीर्तन और भण्डारे का आयोजन था। 27 एकड़ में फैली इस अग्रोहा नगरी को अग्रवाल समाज के संस्थापक महाराजा अग्रसेन ने बसाया था। इन्हीं **महाराजा अग्रसेन जी के 18 पुत्रों के नाम पर हमारे यहाँ 18 गोत्र मान्य हैं।** आइए जानते हैं महाराजा अग्रसेन के बारे में—

महाभारत के युद्ध के समय उनकी आयु मात्र 15 वर्ष थी। युद्ध भूमि में भीष्मपितामह के बाणों से बिंध कर उनके पिताश्री वल्लभ सेन वीरगति को प्राप्त हुए। धर्मराज युद्धिष्ठिर ने उनकी दयालुता की प्रशंसा करते हुए कहा कि "मैंने युद्ध भूमि में कुमार अग्रसेन के परम पराक्रम पूर्ण महाबल, धर्मबल से युक्त इस युवराज की दयालुता देखी है। इसने पिता के वध के संताप को सहन करते हुए, सैंकड़ों घायलों और नि:शस्त्रों को जीवन दान देकर धर्म की रक्षा की।"

श्री अग्रसेन ने अपनी राज्य की सीमाओं का विस्तार करने व दान करने से भी श्रेष्ठ कृत्य (कार्य/काम) दूसरों की जीविका का प्रबन्ध करना समझा। अत: क्षत्रिय धर्म त्याग कर उन्होंने वैश्य (बनिया/जो काम बनाए) धर्म, वर्ण अपनाया।

भारतवर्ष की ही नहीं विश्व की जातियों में अग्रवालों का स्थान बहुत महत्तवपूर्ण है। इसके बहुसंख्यक व्यक्ति वर्तमान में करोड़ों की संख्या में कृषि-शिक्षा-चिकित्सा-व्यापार-तकनीकी संस्थानों में ख्याति प्राप्त हैं एवं निरंतर अर्जित कर रहे हैं। एक ईंट व एक रुपये के सिद्धांत से (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र में) वैश्य समाज (जन्म व कर्म से) को मांसाहारी से शाकाहारी बनाया। **इनके राज्य में मांसाहार निषेध था।** जिससे प्रसन्न होकर महालक्ष्मी ने उन्हें आर्शीवाद दिया कि उनके कुल (अग्रवालों के 18 गोत्रों) पर उनकी (महालक्ष्मी) सदैव कृपा बनी रहेगी। इसलिये वह अग्रवालों (वैश्य समाज)की कुल देवी कहलाईं। दीपावली को जन्म व कर्म से सभी वैश्य समाज महालक्ष्मी की तन-मन-धन से पूजा करते हैं। यही नहीं भगवान शंकर का भी एक हाथ शाकाहारी वैश्य समाज पर है जबकि दूसरा हाथ तीनों वर्णों (ब्राह्मण-क्षत्रिय-शूद्रों) पर है। महाराजा अग्रसेन के पुरुषार्थ की यह रहस्यमयी उदार जीविका का प्रबंध व शाकाहारी नीति व गौरव गाथा महर्षि जैमनी ने धर्मज्ञ जन्मेजय को सुनाई जो समस्त शास्त्रों-पुराणों व वेदों के प्रकाण्ड विद्वान थे। उन्होंने कहा कि हे जन्मेजय, "जैसे समुद्र के पास जाने की इच्छा वाले वणिक पुत्र (बनिये-व्यापारी) के लिये जहाज की आवश्यकता होती है वैसे ही स्वर्ग की कामना वालों के लिये शिष्ट (सभ्य) पुरुषों द्वारा अपनाए धर्म का आचरण (पालन करना) ही जहाज है।

श्री कल्कि बाल वाटिका देश व्यापी प्रचार की ओर

—डॉ. वेद प्रकाश गुप्त (011-23936187)

प्रिय श्री कल्कि भक्तों 21-7-2013 अग्रोहाधाम (हरियाणा) में कल्कि जी की चौकी (भजन, सत्संग, अनुभव गोष्ठी) अनेक रूपों में सुंदर, दुर्लभ व आनंददायी थी। प्रस्तुत हैं कुछ अंश—

1. मूर्ति स्थापना जो 17-7-2013 को हुई थी, उसके उपलक्ष्य में भावुक अथवा लकीर के फकीर न बनते हुए 21-7-2013 को 2 बसें व कई गाड़ियाँ दिल्ली से व सिरसा से 66 जनों की बस व कई गाड़ियों में भक्त वहाँ आए हुए थे।

2. इस विशाल मूर्ति को लगवाने में अटूट मेहनत, बातचीत, मूर्ति बनवाना व औरों को सहयोग संजोने में कितनी परेशानी हुई होगी यह आप हम सब जानते हैं। लेकिन इसमें मामाजी ने शक्तियों के आवाहन व उपचारों से बहुत मदद ली।

3. जब हम अग्रोहा धाम मंदिर में तो मामाजी कुछ कल्कि भक्तो का परिचय करवा रहे थे। कितनी सरलता से समझाना व कार्य का सेहरा अपने सिरसा व दिल्ली के साथियों को देना वाकई सराहनीय था। उसमें कुछ भक्तों की आपबीती सुनवाई जैसे **एक बालिका उपचारों से कितनी कम उम्र में गुजरात में जज बनी बहुत अच्छा लगा।**

गुजरात में बनीं जज

चाटर्ड अकॉऊंटेंट

एक कल्कि भक्ता जिसके बेटे का पढ़ने में मन नहीं लगता था वो बहिन इंदु बंसल के करवाए उपचारों से चाटर्ड अकॉऊंटेंट बना।

4. पिछले 4 महीनों में मामाजी व उनके युवा साथियों को काफी नि:स्वार्थ, परिश्रम, भागादौड़ी करते हुए देख रहा हूँ। कभी दिल्ली कभी बनारस कभी मुक्तेश्वर कभी अग्रोहा इत्यादि व दिल्ली में विभिन्न जगह मूर्ति स्थापना में बिना थकान के बिलकुल तरो ताजा लगे अपने कामों में सभी का लगे रहना एक मिसाल है। इसके साथ-साथ यह सब अपने व्यापार, परिवार व समाज को भी पूरा समय देते हैं। **वाकई ऐसे पॉवरपैक सदस्य मैं बाल वाटिका में देखता हूँ।** अग्रोहा की जनता जिस तरह से कार्यक्रम में हिस्सा ले रही थी व दिल्ली के लोग जिस तरह सहयोग दे रहे थे यह लग रहा था कि यह कार्यक्रम घर में हो रहा है। जैसा कि वहाँ बताया गया था कि श्री कल्कि बाल वाटिका आज से 25 साल पहले कुछ भक्तों के साथ शुरु हुई थी। आज उसमें देश-विदेश से तकरीबन 1800 के करीब बच्चे एवं अब जो माँ बाप बन गए (भक्त और ज्यादा जो जो बनते व पैदा हो रहे) हैं। इस

सबको देखते हुए एक सुझाव मैं आपके सामने रख रहा हूँ। यदि हम इस स्थिति में अपने आप को **अहंकार, अहम व श्रेय (वाहवाही) लेने की भावना को त्याग कर** एक जुट व संगठित तरीके से काम करें तो कलियुग के युगावतार भगवान श्री कल्कि के प्राकटय प्रचार को काफी सहायता मिलेगी। हमको पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण व राजधानी में अपने आप को फैलाना होगा। काम को बाँटकर (टीमवर्क में) करना होगा। इससे बड़े हो रहे बच्चों का (यंग जनरेशन) खास योगदान होगा जैसा जो मैं अब खूब जगह-जगह देख रहा हूँ। वह इसलिये कि अब यही तो हमारे भविष्य हैं। किसी भी कल्कि भक्त को कृप्या अपने से कम न समझें। यहाँ सब दिव्य शक्तियां हैं व कल्कि जी की सेना के अहम हिस्से हैं। बिलकुल वैसे जैसे श्री रामचंद्र जी के साथ वानर सेना (रावण की लंका में) भगवान कृष्ण के साथ ग्वाले गोवर्धन पर्वत उठाते समय थे।

शुरु में मामाजी के साथ कुछ हाथ कार्य करते थे और उनको उनसे कार्य लेना पड़ता था। अब स्थिति उल्टी है। कल्कि जी की कृपा से मामाजी ने 1800 भक्तों को ऐसे शिक्षित किया है कि अगर कभी किसी को जरूरत हो तो वह उनसे सलाह लेवें। क्योंकि उन्होंने उनका हाथ भगवान के हाथ में दिया है, वह अब सब किसी के अधीन नहीं हैं। हम अगर भारतीय सरकार जैसी कार्य विधि पर चले तो संगठित होकर भगवान श्री कल्कि के प्राकट्य का बेहतरीन कार्य कर सकते हैं। उदाहरण के लिये-

अपनी जो भी जरूरत अथवा किसी भी राज्य की कोई भी परेशानी अथवा आर्थिक विचार विमर्श प्रचार सामग्री की सब केन्द्रीय संस्था से बहुत ही सुचारू रूप से करा सकते हैं। इसके बाद हम नैशनल स्तर से विदेश स्तर पर भगवान श्री कल्कि जी की कृपा से प्रस्थान देखते ही देखते स्वयं कर जाएंगे।

प्रिय भक्तों आप देखेंगे कि एक दिन एक ही समय में ही भारतवर्ष में बहुत सी जगह में भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना हो रही है। सत्संग, **कल्कि चौकी,** पूजा अर्चना, बाल वाटिकाएं व प्रचार हो रहा है। यही मेरे कल्कि जी व गुरु हनुमान जी चाहते हैं। इस संगठित तरीके का एक उदाहरण है **ईस्ट इंडिया (कोलकाता) में बहन इंदु बंसल** व श्री महावीर चौधरी जी जो कार्य वहाँ कर रहे हैं व नए-नए प्रोजेक्ट कर रहे हैं वाकई प्रशंसनीय हैं। **सिरसा का कार्य जो बहिन संजू गड़ौदिया** सम्भाल रही हैं। इसी तरह और भक्त आगे आएंगे व बहुत ही अच्छा प्रचार होगा। इसी तरह से हम भारत के और हिस्सों में कार्य श्री हनुमान जी श्री कल्कि जी की कृपा से करते चले जाएंगे।

मार्ग दर्शन के लिये मामाजी हमारे साथ हैं चौबीसो घंटे सातो दिन बगैर थके बगैर संकोच से पर सिर्फ सच्चे व शुभ कार्यों के लिये आपके साथ।

झलकियाँ

*** जहाँ नीति की देवी (सुश्री इंदु बंसल) जिसने कोलकाता रानीगंज-रांची आदि को गुंजाया वहीं भक्ति की देवी (सुश्री संजू गड़ौदिया) ने नीति की देवी के सहयोग से सिरसा व अग्रोहाधाम को कल्कि नाम से गुंजाया।**

*** श्री विमल रातूसरिया ने कठिन से कठिन परिस्थिति में सब हो जाएगा कहकर ऐसे काम पूरा करते थे कि दिल्ली से गए सभी बच्चों के मुख से नहीं मामाजी के मुँह से भी उनके लिये भइया न निकालकर मामा शब्द निकलता था।**

*** जब रसोइयों ने हाथ खड़े किये हम खाना बनाते हैं बाँटते नहीं-संजू जी-मामाजी ने 17 घंटे तनाव में बिताए कि दिल्ली व सिरसा के बच्चों को जश्न मनाने, स्वादिष्ट भोजन देने का वायदा कैसे पूरा करेंगे।**

*** सिरसा की बाल वाटिका प्रति माह के तीसरे रविवार को सर्व सम्मति से अग्रोहाधाम में कल्कि भगवान के समक्ष होगी।**

*** अब संजू बहिन प्रति मास सिरसा अग्रोहा श्री कल्कि बाल वाटिका में योगदान इंदू बंसल की तरह देंगी।**

पिता पुत्र के कंटक स्नान

साथियों यह कहावत नहीं हकीकत है कठिनाइयों दुखों का इतिहास ही सुयश है। बच्चों को अपने झूठे कारनामे बार-बार न गिनवाओ-उन्हें बताओ वह सत्य कष्टदाई बातें जो तुम्हारे साथ बीती हों। इससे बचपन से ही बच्चों में कष्ट-दुख सहने की क्षमता बढ़ती है। मेहनत करके आगे बढ़ने के संस्कार पड़ते हैं। बचपन से ही शरीर के सब अंग जटिल से जटिल काम बच्चे सहज ही कर लेते हैं। और यही उन्हें जीवन में अपने पैरो पर खड़ा रहने की क्षमता भगवान श्री राम लक्ष्मण की तरह प्रदान करता है। वह सात्विक समाज पर बोझ नहीं बल्कि सहारा बनते हैं। इसी संदर्भ में आपको एक छोटी घटना बताता हूँ। 1964 में दुकाने सुबह 8 बजे खुल जाती थीं। मैंने नया काम चावड़ी बाज़ार में शुरु किया था। मैन्यूफैक्चरिंग की वजह से देर हो जाती तो रात को मैं वहीं कंबल ओढ़ा और सो जाया करता था। सुबह बाथरूम में गए स्नान किया, वही कपड़े दोबारा पहन लिये। ऐसा ही योगेश ने 16 जुलाई 2013 को किया मुझे मालूत हुआ तो मैं अचंभित रह गया और मुझे अपने बीते 50 वर्ष की याद हो आई।

(मैं 15-7-2013 को तीन पंडितों को पूजा के लिये अलग कार में और योगेश अलग गाड़ी में अग्रोहा गया। 15-7-2013 को उसका काम वहाँ पूरा नहीं हुआ सो देर रात वह वहाँ सोया, अगले दिन वह कंटक स्नान करके बचा काम पूरा करके 16 जुलाई को दिल्ली आ गया)

अपंग-दरिद्र होने से बचाया स्वप्नानुभव संकल्प-उपचार ने

—मामाजी (9136377829)

11 मई से 14 मई 2013 को मिर्जापुर, विंध्यवासिनी माँ के प्रांगण में एवं वाराणसी में दशाश्वमेध घाट, शीतला मां के मंदिर व खिचड़ी बाबा मंदिर अन्न क्षेत्र कांशी में तीनों जगह भगवान श्री कल्कि की मूर्ति की स्थापना का कार्य चल रहा था। तीनों ही जगह कल्कि बाल वाटिका के बच्चों के अलग-अलग ग्रुप कार्य संभाल रहे थे। 11 मई को मुझे स्वप्नानुभव में एक अपंग व दरिद्र आदमी व्हील चेयर पर बैठा दिखा अनुभव पहले दृष्टा पर जाता है इसलिए मैंने उसी दिन कीर्तन में इसके निमित्त संकल्पों के बाद उपचारों में हाथ लगा कर कूष्माण्डा माँ के मंदिर में कीर्तन के बीच चढ़वा दिए।

जब कलियुग मामाजी को ऐसा बनाना चाहता था

परंतु 12 मई को विंध्यवासिनी मां के प्रांगण में कल्कि जी की मूर्ति स्थापित होने के समय उनका दाँया हाथ खंडित हो गया और माँ दुर्गा की तलवार टूट गई। मैं स्तब्ध रह गया कि 25 वर्षों में आज पहली बार मूर्ति स्थापना में ऐसा क्यों हुआ? तभी मेरी भतीजी रेनू बंसल ने बताया कि उसे भी 11 मई को क्षणिक अनुभव हुआ था कि पहले माँ दुर्गा की बड़ी मूर्ति दिखी फिर अगले ही क्षण एक सिर कटा हुआ नीचे गिरता दिखा। उसके पश्चात मिर्जापुर का काम संभालने वाले मेरे बच्चों ने मुझे बताया कि वहाँ कल्किजी की प्राण-प्रतिष्ठा की पूजा भी बिल्कुल विधिवत नहीं हुई है।

बस अंतर्जगत से सारी बातें स्पष्ट हो गई। कलियुग अपनी पूरी शक्ति से कल्कि भक्तों पर किसी बड़ी दुर्घटना का कहर ढाना चाहता था। पर मेरे कृपानिधान कल्किजी एवं मेरी माँ विंध्यवासिनी ने सारी बला अपने पर लेकर हमें अपंग होने से बचाया। क्योंकि प्यारे बच्चों, माँ विंध्यवासिनी के दरबार में विधिवत पूजा द्वारा स्थापित अति तेजवान मूर्ति ही स्थापित होकर कलियुग की शक्तियों का हनन कर सकती है। इसीलिए दुर्घटना टालने में मूर्ति क्षतिग्रस्त हुई।

दोबारा 18 जून को बाल वाटिका के बच्चे मेरे साथ हवाई जहाज द्वारा विंध्याचल मिर्जापुर गए। नई मूर्तियों की अति विद्वान ब्राह्मणों द्वारा विधिवत पूजा करवा कर कल्कि जी, दुर्गा जी एवं श्री हनुमान जी की मूर्तियाँ स्थापित कीं।

20 जून को मेरे साथ गए हर्षित गुप्ता को स्वप्नानुभव जिसके द्वारा इस बात की पुष्टि भी हो गई कि माँ विंध्यवासिनी प्रसन्न हैं साथ ही इस पूजा में सम्मिलित भक्तों के विशेष भाग्योदय होने शुरू होंगे। बच्चों, हैं ना मेरे कल्कि जी चमत्कारी। पग-पग पर अपने भक्तों को संभालते हैं एवं बिगड़े कार्य सही करते हैं। हमें तो बस उनका कार्य करने की चाहत रखनी है एवं अपने कदम आगे बढ़ाने हैं। आप कहेंगे तब से अब से किसको क्या मिला है? तो श्री कल्कि की कृपा से अगले अंको में वह भी छापने का प्रयास करेंगे।

सत्संगमयी अनुभव गोष्ठी

दिनांक : शनिवार 3 अगस्त 2013 एवं 7 सितंबर 2013
स्थान : एम.के. हाउस, सी-2/8 अशोक विहार फेज-2 दीप सिनेमा के सामने, नई दिल्ली-52 **समय :** दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री राकेश गोयल, सुश्री सुषमा गोयल (9899698240)
संचालिका- सुश्री इंदू बंसल (011-32448401)

दिनांक : 10 अगस्त 2013 एवं 14 सितंबर 2013
स्थान : जी-3 थर्ड फ्लोर,मित्रद्वीप अपार्टमेंट* पटपड़गंज दिल्ली-92 समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री सुनील गर्ग, सुश्री संगीता गर्ग (9873349478)
संचालिका- सुश्री मेघना गोयल (913677829)

पृ. 2 का शेष

की पूजा करवानी रह गई। मैं अभी पहले उनकी पूजा करवा देता हूँ। हम सभी महालक्ष्मी जी से मात्र सौ गज की दूरी पर मूर्ति स्थापना की तीन दिवसीय पूजा कर रहे थे। इस पर मामाजी ने मीठे शब्दों में आचार्य जी से कहा कि आप हमारी तरफ से यहाँ पर और सामने माँ के दरबार में हम सबको ले जाकर संस्कृत के श्लोकों से क्षमायाचना एवं पूजा करवा दीजिए। हम आचार्य प्रभाकर जी के आभारी हैं कि उन्होंने ऐसा करवा दिया। 21 जुलाई तक चला कल्कि महोत्सव निर्विघ्न संपन्न हुआ।

मूर्ति स्थापना से मिले तेज से जब शरीर में कंपन हुआ

17 जुलाई बुधवार को प्राण प्रतिष्ठा के दिन हवन के बाद जब प्रभाकर शास्त्री जी ने भगवान श्री कल्कि जी की आंखो से पट्टी खोलकर उनकी आंखो की तरफ देखा तो उसमें से ऐसा प्रखर तेज निकला जिसे उनका शरीर व आत्मा सहन नहीं कर पाए उनके अनुसार यह पहली बार (अनेक मूर्ति पूजाओं में से) वह वहाँ पर कंपकंपाए। इसके बाद जब उन्होंने वहाँ पर श्री कल्कि के परम भक्त श्री हनुमान जी की आँखों पर से पट्टी खोली और उनकी आँख से आँख मिलाई तो उससे निकले तेज से उनका शरीर एकदम लड़खड़ा गया।

विस्तृत जानकारी के लिए श्री आचार्य प्रभाकर शास्त्री-(09871815989)

प्यारे बच्चों अब तो आपको विश्वास हो गया कि अग्रोहा में यह कल्कि जी का अद्भुत मंदिर है।

भगवान श्री कल्कि के प्रोजेक्ट पूरे करते समय स्वास्थय, धन, वैभव को बनाए रखने का व निरंतर बढ़ाने का सरल उपाय

— मामाजी (9136377829)

जब कोई कल्कि भक्त कल्कि जी का बड़ा काम करने जाता है तो आसुरी शक्तियाँ कर्ता अथवा परिवार जनों को परेशान करने में जुट जाती है। ऐसे में कल्कि जी की संबंधित शक्तियाँ उपचारों के माध्यम से इन आसुरी शक्तियों के प्रहारों को विफल करवाती हैं। प्रस्तुत हैं यहाँ ऐसी प्रत्यक्ष घटनाएं—

1. ग्रीन पार्क, डियर पार्क के पास, शिव मंदिर, नई दिल्ली में कल्कि जी की तीन दिवसीय (8 जुलाई से 10 जुलाई) मूर्ति स्थापना करवाने हेतु जब श्रीमती प्रकाशवती (धर्मपत्नी गोलोकवासी श्री श्यामलाल जी कपड़े वाले) परिवार सहित तत्पर हुईं ऐसे में 8 जुलाई की सुबह से उनकी छाती में दर्द होना शुरू हो गया। शाम को उन्होंने मामाजी (अपने भांजे) को सारी बात बताई। मामाजी ने तुरंत उनकी पोती कुमारी अदिति से जल, चावल, रूपए मंगवा कर निम्न संकल्प करवाए—

1. धंवंतरी वैद्य जी का-20 रु से 2. योगमाया महारानी जी का 20 रु से 3. भैंरो जी का दवाई वाला 70 रु से 4. यमुना महारानी जी का 5 रु से 5. हनुमान जी के योगी योगिनी का 129 रु से।

प्रार्थना— मेरे और मेरे परिवार को भगवान श्री कल्कि की प्राण प्रतिष्ठा से जो अद्भुत तेज मिलना शुरू हो गया है उससे राक्षसी शक्तियों (कलियुग) ने घबराकर मेरे स्वास्थय पर प्रहार किया है। इस कारण मेरी छाती में दर्द हो रहा है। यह शक्तियाँ मुझे अस्पताल पहुँचाना चाहती हैं। इन संकल्पों के द्वारा मैं सभी दैवीय शक्तियों से प्रार्थना करनी है कि इन आसुरी शक्तियों को उनका भाग देकर उनको संतुष्ट करके उनके प्रहारों को विफल कर मुझे बचाइए जिससे मैं सफलतापूर्वक कल्कि भगवान की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के महोत्सव को संपन्न कर सकूँ। उपचार करते ही उनकी छाती का दर्द समाप्त होना शुरू हो गया और अगले दिन पूर्ण स्वस्थ थीं

2. धर्मपुरा में श्री रचित अग्रवाल जी भगवान श्री कल्कि की प्राण प्रतिष्ठा की तीन दिवसीय पूजा कर रहे थे तब आसुरी शक्तियों ने उनके पिताजी के दिल में हलचल पैदा की। मामाजी को खबर मिलते ही उन्होंने श्रीमती प्रकाशवती (मामीजी को जो उपचार करवाए थे उनसे भी तुरंत करवाए) उपचार करने के 10 मिनट बाद ही वह साधारण अवस्था में आ गए। 14 जुलाई की सुबह आसुरी शक्तियों ने श्री रचित अग्रवाल की धर्मपत्नी सुश्री निधि अग्रवाल को ऐसा घुमाया कि वह श्री कल्कि की प्राण प्रतिष्ठा में सम्मिलित होने से वंचित हो जाएं लेकिन तुरंत उनकी भाभी सुश्री प्रियंका ने मामाजी से पूछकर उन्हें योगमाया जी, भैरों जी एवं बगुलामुखी माँ व श्री कल्कि जी के उपचार करवा दिए। जिसका सुपरिणाम यह हुआ कि 14 जुलाई को पूरे परिवार ने बड़े ही भव्य तरीके से यह महोत्सव संपन्न किया। समस्त परिवार जनों व मित्रों को उन्होंने अत्यंत स्वादिष्ट भंडारे के बाद कल्कि जी के 56 भोग की टोकरियाँ श्री कल्कि जी के साहित्य के साथ देकर सभी को अचंभित कर दिया। 12 जुलाई से 14 जुलाई तक की सुंदर व्यवस्था के लिए उनका परिवार साधुवाद का पात्र है।

निष्कर्ष : कल्कि जी का काम लेकर चले हो तो कलियुग की छाती पर पैर रखकर चलने के लिए उपचारों का सहारा तो लेना ही होगा। विजय आखिर हमारी ही होगी।

अतः बन पड़े तो जब कल्कि भगवान का कार्य शुरू करने से पहले ही यह उपचार कर दें—

1. भैंरों जी का दवाई वाला 2. योगमाया जी का 20 रु से **बार बार परेशानी आने पर उत्सव पूरा होने तक दो तीन बार कर दें।**
ऐसा करने पर अग्रोहा धाम व विंध्यवासिनी मिर्जापुर की प्राण प्रतिष्ठा निर्विघ्न संपन्न हुई।

संभल सुप्त तीर्थ जागरण अभियान ने

संभल में भी अपना रूप दिखाया

संभल सुप्त तीर्थ जागरण अभियान में दिल्ली के कल्कि भक्तों के ही नहीं संभल के कल्कि भक्तों के भी असंभव काम संभव होने शुरू हो गए। सभी नए जुड़ने वाले भक्त अपनी मन मांगी मुरादें पा रहे हैं। अब तो लगता है वह दिन दूर नहीं जब दिल्ली से प्रतिमास जाने वाली 9-10 गाड़ियों के साथ बस भी जानी शुरू हो जाए। 25 अगस्त 2013 रविवार को संभल में प्राचीन श्री कल्कि विष्णु मंदिर पूर्वीकोट में श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ सुश्री इंदू बंसल व नीलम वार्ष्णेय की अध्यक्षता में संपन्न होगा। इसमें आप सभी आमंत्रित हैं।

श्री कल्कि जयन्ती महोत्सव श्री गौरी शंकर मन्दिर में 11अगस्त 2013

सुबह 5:45 बजे श्री कल्कि सहस्त्रनामावली द्वारा भगवान श्री कल्कि के सहस्त्रार्चन में जो भी कल्कि भक्त चाहें कोई सी 1008 वस्तुएँ (किशमिश, बादाम की गिरी, मखानें, बेसन के लड्डू, फूल) आदि लाकर या बिना लाये भाग ले सकते हैं। भगवान श्री कल्कि की पोशाक, फूलों के श्रृंगार, सहस्त्रार्चन, प्रसाद आदि में सहयोग के लिए सम्पर्क—

सुश्री पूजा गुप्ता (9811858723)

भगवान श्री कल्कि श्री अग्रोहा धाम में सपरिवार विराजे

. श्री कल्कि जी की मूर्ति स्थापना सपरिवार
पद्मा जी-रमा जी-श्री हनुमान जी- दुर्गा जी व मां वैष्णों सहित
जिसमें दशावतार महाविष्णु के ब्रह्माण्ड बहुत ही रमणीय है।

वैश्यवंश शिरोमणि महाराजा अग्रसेन

अखण्ड भूमंडल के राजा, निष्कलंक संकटहारी।
सात द्वीप नवखण्ड में दमके
कल्कि नाम की उजियारी।

महाविष्णु शांत मुद्रा में प्रस्तुत 11 फुट गुना 7 फुट के कलर चित्र में सकल ब्रह्माण्ड के नायक दर्शाय गए हैं। उन्हीं के साथ दिखाए गए हैं अनेक भू (पृथ्वी जिसपर हम रहते हैं) मण्डल (ब्रह्माण्ड) जहाँ उन महाविष्णु की अनन्य लीलाएं (कहीं रामावतार-कृष्ण अवतार-कहीं मत्स्य अवतार आदि लीलाएं) चल रही हैं। यही महाविष्णु अब कल्कि बनकर इस भूमंडल (जिस पर हम रह रहे हैं) श्री कल्कि रूप में आकर सत्युग की स्थापना करेंगे।

महाराजा अग्रसेन की कुलदेवी महालक्ष्मी जिन्होंनं अपनी असीम कृपा देकर भगवान श्री कल्कि को सपरिवार अग्रोहा धाम बुलाया

दिल्ली-चंदौसी-संभल सिरसा-बनारस आदि बाल वाटिकाओं की बालक बालिकाएं नवयुवक व युवतियां कल्कि जी के भजनों-नाट्य नृत्यों का आनंद लेते हुए

महज 11[1] हफ्ते में जयपुर से 3000 किलो के मकराने के पत्थर से भगवान श्री कल्कि की साढ़े पाँच फुट की अदभुत मूर्ति बनकर अग्रोहा धाम की ओर

साढ़े पांच फुट की कल्कि जी की मूर्ति बनाने से पहले छोटी सैम्पल की मूर्ति बनाई जिसको देखकर मूर्तिकारों ने गढ़ाई की

3000 किलो की मकराने की शिला जिस पर कल्कि जी की मूर्ति बनी

संगमरमर शिला पर मूर्ति प्रभारियों के समक्ष कार्य करते हुए प्रवीण मूर्तिकार

पेटी में पैक साढ़े पांच फुट की कल्कि जी की मूर्ति उठाती हुई क्रेन

दिल्ली-सिरसा बाल वाटिका के साहसी सदस्य पेटी खोलते हुए

जयपुर से श्री सोनू-मोनू अग्रवाल व कल्कि बाल वाटिका दिल्ली-सिरसा से मेहनत करने वालों के खुशी के पल

श्री कल्कि जी के लिए बनी चौकी पर विराजते हुए कल्कि भक्त एवं जयपुर से आए कारीगर

दशावतारों के बीच पूजा अवस्था में भगवान श्री कल्कि

श्री कल्कि जी की मूर्ति स्थापना के सूत्रधार श्री विमल रातुसरिया-सुश्री सुनीता रातुसरिया-सुश्री सुनीता बंसल व कुमार अंकित गड़ौदिया का परिचय कराते हुए मामाजी

भावुकता व लकीर का फकीर न बनते हुए छुट्टी के दिन रविवार को सिरसा-दिल्ली से आए लगभग 250 बालक बालिकाओं उनके माता-पिता व भोजन का संबंधियों ने खेल कूद में सुबह से शाम तक आनन्द (जश्न) मनाया व स्वादिष्ट भोजन का मजा लिया।

श्री कल्कि बाल वाटिका सिरसा के बालक बालिकाएं डांडिया करते हुए

भगवान श्री कल्कि हनुमान जी व दुर्गा जी सहित 10 जुलाई 2013 में ग्रीन पार्क, डियर पार्क के पास नई दिल्ली में विराजे

हमारे गुरु श्री हनुमान जी
हनुमान जी को गुरु बनाकर कल्कि जी की आराधना करने से परेशानियों से निकलने का रास्ता तुरंत मिलने लगता है

चमत्कारी प्रभु श्री कल्कि जी

भगवती रूपणी माँ दुर्गा
महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती की शक्ति संजोए माँ वैष्णो तीन युगों से भगवान श्री कल्कि के लिए तप कर रही हैं

शिव मंदिर ग्रीन पार्क के ट्रस्टी श्री एम.पी.शर्मा, श्री एम.एल.चोपड़ा, श्री इंद्र एबट, श्री ब्रज मोहन सिंह, सुश्री बिमला मदान द्वारा श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना में अभूतपूर्व सहयोग की सराहना करते हुए मामाजी

एवर ग्रीन स्वीटस के मालिक श्री मोहन लाल चोपड़ा जी कांग्रेस अध्यक्ष श्री जय प्रकाश अग्रवाल के अभिवादन के बाद भगवान श्री कल्कि, श्री हनुमान व श्री दुर्गा जी का स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

कांग्रेस अध्यक्ष श्री जय प्रकाश अग्रवाल 10 जुलाई 2013 को शिव मंदिर ग्रीन पार्क में श्री कल्कि जी की प्रथम आरती करते हुए

कल्कि भक्तों का भी अभिवादन करते हुए
महामहिम श्री जयप्रकाश अग्रवाल

9 जुलाई 2013 को ग्रीन पार्क नई दिल्ली में भव्य शोभा यात्रा एवं 14 जुलाई 2013 को आयोजित कल्कि जी की चौंकी के दृश्य

श्री कल्कि बाल वाटिका के बालक बालिकाओं ने डांडिया नृत्य द्वारा शोभा यात्रा में खूब रंग जमाया

14 जुलाई 2013 को आयोजित कल्कि जी की चौकी में

श्री पदमाशरण गोयल एवं श्री प्रवीण शर्मा ने कल्कि जी के भजनों ने सुंदर समा बांधा

10 जुलाई 2013 को भगवान श्री कल्कि जी सिरसा में नोहरिया बाजार के श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर गंगोरीवाला में विराजे

श्री कल्कि बाल वाटिका सिरसा के बालक व बालिकाएं शोभा यात्रा में थिरकते हुए

"लगे रहो कल्कि के प्यारों सत्युग की तैयारी में
धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में
दिव्य लोक से तुम्हें भुवनपति ने किसके बल पर भेजा है
केवल कल्कि नाम न भूलो जिसके बल पर भेजा
स्नेह तुम्हारा रहे निरंतर निष्कलंक अवतारी में"

आप भाग्यवान तो हैं ही

क्या आप भी राजा रानी जैसा जीवन जीना चाहते हैं तो?

गुरु जी के शब्दों में— चले तो चींटी भी हजारों मील चली जाए, नहीं चले तो गरूड़ भी वहीं खड़ा रहे। साहस से काम लें। अपने बराबर या जान पहचान की जगह जहाँ काफी सनातनधर्मी पूजा करने आते हैं वहाँ आपको वहाँ के मैनेजमेंट को संतुष्ट करके भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति लगाने की इजाजत लेनी है तो श्री कल्कि विष्णु मंदिर , 815 चौक कुण्डेवालान में संगमरमर की बनी मूर्तियों में से कोई भी कल्कि जी की–पदमाजी–रमाजी–श्री हनुमान जी–श्री दुर्गा जी–माँ वैष्णवी की पसंद करके यह शुभ कार्य शीघ्र पूरा करने का मन बनाएं। हमारी कोई मदद की आवश्यकता हो तो बताएं। हम चौबीसों घंटे सातों दिन आपके साथ हैं। →

सुश्री अलका गोयल–9811281271 श्री राहुल अग्रवाल–9891879718

←

आश्चर्यजनक किंतु सत्य.....महाविष्णु का भगवान श्री कल्कि ऐसा चमत्कारी अवतार जिसके प्रकट होने से पहले सिद्ध पीठों और शक्तिपीठों में मूर्तियाँ लग रही हैं और विधिवत पूजा हो रही है

विंध्याचल में भगवान श्री कल्कि श्री हनुमान जी एवं दुर्गा जी सहित 19 जुलाई 2013 को पुन: विराजे

मनमोहक भगवान श्री कल्कि छिपीवाड़ा धर्मपुरा में 14 जुलाई 2013 को विराजे

महाशक्ति दुर्गा मंदिर गगन विहार में भगवान श्री कल्कि के साथ 7 जुलाई 2013 को मां पदमा व रमा भी विराजीं

माँ गंगा द्वारा भगवान श्री कल्कि के चरण स्पर्श का अदभुत दृश्य दशाश्वमेध घाट बड़ी सीतला माँ के मंदिर में

स्वप्नमयी गंगा माँ

अदभुत किंतु सत्य

गंगा मैया वाराणसी (कांशी) में दशाश्वमेध घाट जहाँ ब्रह्मा जी ने दस अश्वमेध यज्ञ किए थे एवं जहाँ प्रतिदिन गगा जी की आरती होती है वहीं बड़ी सीतला मां के मंदिर में प्रवेश दशााश्वमेध घाट बड़ी सीतला माँ के मंदिर में अब भगवान श्री कल्कि जी के चरणों को पखारती हुई प्रतिवर्ष जाएंगी। यह अद्भुत दृश्य प्रतिवर्ष श्रावणमास में दर्शनीय है।

4 का कमाल

कल्कि मंडल के महामंत्री श्री रामनारायण गोयल की अध्यक्षता में अक्टूबर 2009 में मैं हरिद्वार गया। वहाँ 2 अक्टूबर की सुबह मुझे स्वप्नानुभव में (ऊपर दिखीं) स्वप्नमयी माँ गंगा आशीर्वाद रूप में दिखीं। कमाल है 4 वर्ष में माँ गंगा ने मुझ दास से क्या क्या बेहतरीन काम कराए और 4 महीने में तो कल्कि जी की 15 छावनियाँ बनवा कर मुझे निहाल कर दिया। —मामाजी

बड़ी सीतला मां के मंदिर मे श्री कल्कि भगवान मां दुर्गा एवं हनुमान जी सहित विराजे भक्तों को प्रभु श्री कल्कि के दर्शनों के साथ ही पीछे लगे पारदर्शी टफन ग्लास से माँ गंगा के सर्वदा दर्शन होते रहेंगे।

11 का कमाल जहाँ कल्कि जी वहाँ कलियुग भी

अगस्त महीने की पत्रिका पर प्रभु ने 11^3 घंटे बिना बिजली की रूकावट के काम करवाया और पत्रिका पूर होते ही कलियुग ने लेन के एक उसी कल्कि भक्त की बिजली को 11^4 घंटे तक गायब किया।

लखनऊ में छपने वाले मासिक पत्र ज्योतिष सागर में भगवान श्री कल्कि की जयन्ती पर विशेष के अंतर्गत यह लेख छापा गया

भगवान कल्कि आएंगे पापियों को मिटाएंगे

आभार : अंकुर गौतम (सहारा चैनल) लखनऊ

उपलब्ध : कल्कि ग्रुप रीयल फेस बुक

भगवान् कल्कि आएँगे, पापियों को मिटाएँगे

कल्याण नवंबर (11²) 2012 में छपा लेख

श्री हरि का कल्कि रूप में अवतरण एवं गोसंरक्षण

(पं लक्ष्मीनारायण जी)

यद्दोर्दण्डकरालसर्पकवलज्वालाज्वलद्विग्रहाः
नेतुः सत्करवालदण्डदलिता भूपाः क्षितिक्षोभकाः।
शश्वत् सैन्धववाहनो द्विजजनिः कल्किः परात्मा हरि
पायात्सत्ययुगादिकृत्स भगवान्धर्मप्रवृत्तिप्रियः॥
(श्री कल्कि पुराण)

भयंकर अत्याचार से पृथ्वी की शांति का नाश करने वाले राजाओं को अपनी भयंकर भुजाओं रूपी भुजंगों की विष की ज्वाला से भस्म करेंगे, जिनकी भयंकर तलवार की तेज धार से घोड़े की सवारी करने वाले सत्यादि युगों में अवतार लेनेवाले, धर्म की प्रवृत्ति जिन्हें प्रिय है, वे भगवान कल्कि परमात्मा हरि रक्षा करें।

भारत एक कृषि प्रधान देश है, ऋषियों मुनियों की तपोभूमि है। गाय और बैल कृषि के साथ साथ आध्यात्मिकता और हमारे दैनिक जीवन से भी जुड़े है। सनातन धर्म में तो द्वापर युग में गै माता और भगवान कृष्ण का इतना स्नेह संबंध रहा कि कृष्ण ने बाल्यकाल से ही गैया चराई और उनका नाम गोपाल पड़ गया।

गो सेवा से राष्ट्र की सुरक्षा एवं सुख संपन्नता संभव है। इतिहास साक्षी है कि जब तक भारत में गौ सेवा रही तब तक भारत भूमि सुरक्षित एवं सुख संपन्न बनी रही।

इसी कारण हम प्राचीन गुरूकुल में गौ सेवा को आवश्यक रूप से पाते हैं। गौ सेवा के माध्यम से बालक गौ मूत्र, गोबर और गौ दुग्ध से बनने वाल विभिन्न उत्पादो से परिचित हो जाते थे। अर्थात् कठिन से कठिन परिस्थिति में भी गौ धन से परिवारों की जीविका चल जाती थी इससे आत्महत्या जैसा घिनौना कदम उठाने की आवश्यकता ही नहीं थी।

गाय की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह बाँझ होकर, बूढ़ी होकर भी अनुपयोगी नहीं है। बूढ़ी गाय भले ही दूध देना बंद कर दे पर उसके मूत्र और गोबर से अनेक उत्पाद बनाए जा सकते हैं। गाय के गोबर में माँ लक्ष्मी का और मूत्र में माँ गंगा का वास होता है। गाय में 33 करोड़ देवी देवताओं का वास होता है। गाय के मस्तक से पीठ तक हाथ फेरने से ह्रदयाघात, ब्लड प्रैशर (बी.पी.) ओर तनाव (डिप्रैशन) जैसी बीमारियों से बचे रह सकते हैं।

विदेशियों की कूटनीति ने हमारे नेताओं (शासकों) को ऐसा समझाया कि सूखा पड़ने पर गाय का चारा कहाँ से लाएं इसलिए इन्हें काटा जाए इस दुष्कृत्य के लिए गाय काटने की मशीनें विदेशों से मंगावाई गईं। और तब से शुरू हुआ यह घिनौना खेल अब तक भी थमने का नाम नहीं ले रहा है। आजादी से अब तक यदि इन 50 करोड़ गायों को बचा लिया जाता तो आज हमारा भारत देश गाय के मूत्र, गोबर और दूध के उत्पादों से ही इतना समृद्ध राष्ट्र होता कि वह **उधार लेने वाले देशों में से नहीं उधार देने वाले देशों में अग्रणी होता।** हमारे देश में जहाँ गाय की पूजा होती थी वहाँ कितनी नृशंसता से आज वह कटती हैं इस बात का अंदाजा इस सत्य को सुनकर लगाया जा सकता है। कातिल ओर व्यापारी पशुओं को ट्रक में भर कर अधमरी स्थिति में यहाँ लाते हैं और उन्हें इस तरह तड़पाकर मारा जाता है कि कुंभीपाक नरक का वर्णन भी फीका पड़ जाता है। हत्या घर की क्षमता से तीन गुणा अधिक पशु यहाँ कटते हैं। यही मांस पाँच सितारा होटलों में परोसा जाता है।

विदेशों में हमारी गऊ माता के साथ एक और चाल चली गई कि मृत और अक्षम गायों को मार कर पीस कर उनके चूर्ण को जीवित गायों के भोजन में मिला कर खिलाया गया ताकि उनसे ज्यादा दूध प्राप्त किया जा सके। गाय को शाकाहारी से मांसाहारी बना दिया गया। जिसका परिणाम यह हुआ कि विदेशों में मैड काऊ बीमारी फैलने लगी जिसके निवारण के लिए मैड काऊ की दवाई का इंग्लैंड में अविष्कार हुआ।

द्रौपदी ने जब राजसभा में अपने पाँचो पतियों को लाचार पाया तो कृष्ण को दोनों हाथ उपर उठाकर पुकारा तब नारायण ने वस्त्रावतार लेकर द्रौपदी की रक्षा की। आज द्रौपदी की तरह लाचार यह गाय माता अपने कृष्ण (कल्कि)की ओर निहार रही हैं कि वह आकर इनकी सुध अवश्य लेंगे। और कृष्ण कल्कि रूप में अपनी प्यारी गऊओं की सुध लेने को अवतार ले चुके हैं। निरंतर धर्म का ह्रास होने से 5098 वर्ष में देखते देखते ही गऊ, विप्र, धर्म व सज्जन लोगों रक्षा के लिए श्री हरि कल्कि को अवतरित होना पड़ा।

भगवान श्री कल्कि के महामंत्र जय कल्कि जय जगत्पते पदमापति जय रमापते का कम से कम 21 बार जाप करके प्रार्थना करें कि हे **श्री कल्कि भगवान गौ विप्र धर्म की रक्षा कीजिए, भूमि का भार उतार दीजिए। कलियुग का नाश करके सत्युग की स्थापना कीजिए। श्री कल्कि की पुकार ही एक रास्ता है गाय माता,देश और धर्म को बचाने का।**

श्री कल्कि द्वारा पितृदोष-अदृश्य संकट निवारण के लिए नाग पंचमी पर बताया गया उपचार

- एक बेसन का लड्डू लेकर, उसके चाकू से पाँच टुकडे करके सर्पनागों के देवता वासुकी जी से (जिन्हें भगवान शंकर गले में धारण किये हुये है) इस प्रार्थना के साथ भेंट करें: हे वासुकि जी! मैं आपको यह लड्डु भेंट कर रहा हूँ इसे स्वीकार करके इसे उन नाग शक्तियों-एवम् कलियुगी शक्तियों को पहुंचा कर संतुष्ट कीजिये जो मुझ में-मेरे परिवार में मेरे व्यापार में रुकावट बने हुये हैं। मुझे कल्कि जी का काम करना है—मुझे रास्ता दीजिये। यह लड्डू पिण्डी अथवा भोले वावा के आगे रख दीजिये। आपको इसका प्रसाद नही लेना है।
- जो भक्त पितृदोष से ग्रसित है वह एक लोटा गाय का दूध लेकर यमुना जी के तट पर जाकर यमुना जी का जल छूकर अपने पर छिड़ककर लोटे से दूध यमुना महारानी को इस प्रार्थना से चढ़ा दें, हे यमुना महारानी! (खुद अथवा परिवार) मैं/हम यह दूध आपको चढ़ा रहे हैं। हे माँ यम की शक्तियाँ, भटकती आत्माये,अतृप्त पितृ शक्तियाँ जो हैं वह अपना भाग इसमें से लेकर संतुष्ट होकर अपने लोकों में जावें हमे कल्कि जी का काम करना हैं हमे रास्ता दें।

नाग पंचमी पर पूजा
पितृ दोष निवारण

वैभवता के साथ संयुक्त परिवार की ओर श्री कल्कि बाल वाटिका के बढ़ते कदम

* प्यारे साथियों, 900 वर्ष की मुगलों की गुलामी में हिन्दुओं के संस्कार खत्म नहीं हुए।

* लेकिन 150 वर्ष की अंग्रेजों की गुलामी के दौरान (1857 के गदर के बाद अंग्रेजों ने हमारी हर एक अच्छी संस्कारी पल्लवित होती संस्कृति का गहन कूटनीति से अध्ययन करके उसे रेशम की डोरी से ऐसा काटा कि मार भी दे और मारते नज़र न आये।

* हमारे त्योहार उपाहसित होकर टीचर-मदर-फादर-बर्थ डे में बदले।

* माँ बाप का सम्मान बड़े होने पर सन्तान द्वारा-हमें जन्म क्यों दिया? हमारा पालन पोषण करके कोई एहसान थोड़े ही कया है।

* पतिव्रता-सती का स्थान युवा पीढ़ी ले रही है- लिव-इन रिलेशनशिप के रूप में।

* मल्टी नेशनल कम्पनी में नौकरी करने वाले पति-पत्नियों ने अब विदेशियों की तरह बच्चे पैदा करने ही बंद कर दिये हैं। कमाल है विदेशी सरकार की तरह ही अब भारत सरकार भी बच्चों की पढ़ाई पर टैक्स में छूट दे रही है।

हम नीचे आपको सैद्धन्तिक रूप में कुछ विशिष्ट जानकारियों से अवगत करा रहे हैं। इसी के साथ अपनी सरल सनातन प्रणाली भी पेश कर रहे हैं उससे आप-आपका परिवार- आपके आने वाले बच्चों पर इस पाश्चात्य सभ्यता दोनो का समावेश होने पर हमारे हिन्दुत्व संस्कारों पर अच्छा असर पड़ेगा क्योंकि हम कर्म भूमि पर है भोग भूमि पर नहीं। इससे हमारे लोक-परलोक दोनों बनेंगे।

देश गुलाम क्यों बनता है?

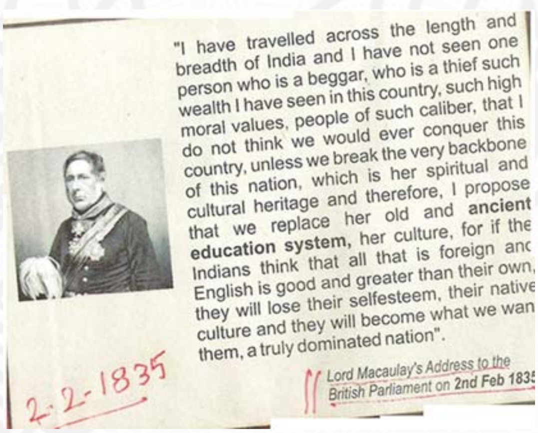
"I have travelled across the length and breadth of India and I have not seen one person who is a beggar, who is a thief such wealth I have seen in this country, such high moral values, people of such caliber, that I do not think we would ever conquer this country, unless we break the very backbone of this nation, which is her spiritual and cultural heritage and therefore, I propose that we replace her old and **ancient education system**, her culture, for if the Indians think that all that is foreign and English is good and greater than their own, they will lose their selfesteem, their native culture and they will become what we want them, a truly dominated nation".

Lord Macaulay's Address to the British Parliament on 2nd Feb 1835

2-2-1835

गूगल से ली गई प्रतिलिपि जिसमें लॉर्ड मैकाले की स्टेटमेंट छपी है

मैं भारत में काफी घूमा हूँ। दाएं, बाएं, इधर-उधर मैंने यह देश छान मारा और यहाँ मुझे एक भी भिखारी, एक भी चोर देखने को नहीं मिला। यह देश इतना समृद्ध है और इसके नैतिक मूल्य इतने उच्च हैं और यहाँ के लोग इतनी सक्षमता और योग्यता लिए हुए हैं कि हम यह देश कभी जीत सकते हैं यह मुझे नहीं लगा।

इस देश की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपरा इस देश की रीढ़ है और हमें यदि यह देश जीतना है तो इसे तोड़ना ही पड़ेगा। उसके लिए इस देश की प्रार्थना, शिक्षा पद्धति और संस्कृति बदलनी ही पड़ेगी। भारतीय लोग यदि यह मानने लगें कि विदेशी (विशेषत: अंग्रेजों) जो हैं श्रेष्ठ हैं अपनी स्वयं की संस्कृति से भी ऊंची है तो वे अपना आत्मसम्मान गंवा बैंठेंगे और फिर वे वही बनेंगे जो हम चाहते हैं—एक गुलाम देश

2 फरवरी 1835 को ब्रिटेन की पार्लियामेंट में दिए गए लार्ड मैकाले के भाषण के कुछ अंश आभार : भारत स्वाभिमान ट्रस्ट फेस बुक

इस संबंध में मैकाले द्वारा उसकी सभ्य भाषा (Polished Language) में अपने पिता को लिखे गये पत्र के कुछ अंश प्रस्तुत हैं—

प्रिय पिताजी, हमारे अंग्रेजी स्कूलों की बड़ी आश्चर्यजनक प्रगति हो रही है। भारत भर के लोगों को अंग्रेजी शिक्षा देने की हम बहुत कोशिश कर रहे हैं। केवल हुगली नामक एक नगर में डेढ़ हजार लड़कों को शिक्षा दी जाती है। हिन्दूओं पर इस शिक्षा का गहरा और व्यापक प्रभाव पड़ रहा है। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त कोई भी हिन्दू अपने धर्म में विश्वास नहीं रखता है, कुछ व्यक्ति ईसाई धर्म दीक्षित भी हो गए हैं। यदि हमारी शिक्षा योजना मजबूती के साथ प्रचलित रहेगी तो तीस साल के अंदर बंगाल के प्रतिष्ठित परिवारों में कोई मूर्ति पूजक नहीं रह जाएगा, इसका मुझे अटल विश्वास है। हम धर्म परिवर्तन की योजना के बिना ही यह सब सिद्ध हो सकता है। ज्ञान एवं मनन से भी यह अनायास सिद्ध हो सकता है। धार्मिक स्वतंत्रता से इसका किसी तरह विरोध नहीं होगा। सुन्दर भविष्य की इस सम्भावना में मैं हार्दिक आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ।

—आपका प्रिय पुत्र, मैकाले

Registered with the Registrar of Newspaper for India Under No. Delhi-N/2005/15596 Postal D. No. DL(DG)-11/8061/2012-2014

ग्यारहवें (11^5) महीने में देखें कल्कि म्यूजियम की अदभुत छवि

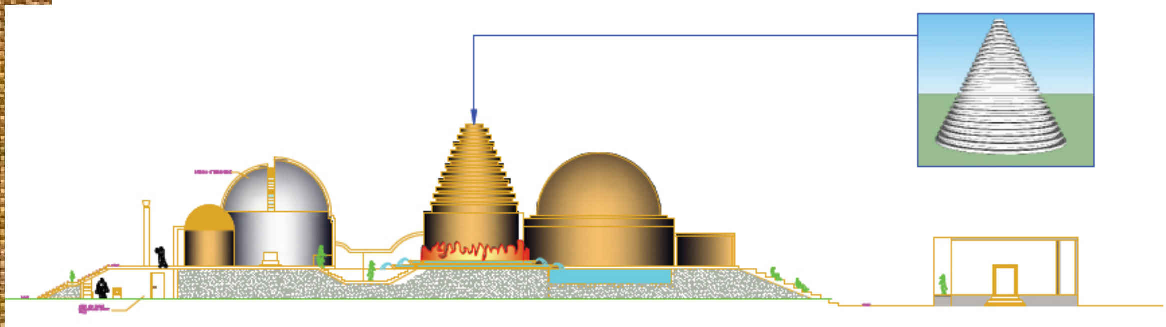

कल्कि संग्रहालय के लिये आर्किटेक्ट श्री राजीव गोयल द्वारा प्रस्तुत की गई एक छवि

भगवान श्री कल्कि के प्रचार के लिए मंदिरों में रुपए चढ़ाने की बजाए कल्कि जी का साहित्य 1 रुपए या 5 रुपए का सिक्का रखकर चढ़ाएं

श्री कल्कि बाल वाटिका

चाँदनी चौक ❖ कसेरू वालान, पहाड़गंज ❖ पालनपुर ❖ देहरादून ❖ असरोही ❖ कोलकाता ❖ चेन्नई

1903/3, पहली मंजिल, चाँदनी चौक, दिल्ली-110006 सम्पर्क : 23886646, 23866661

हाउस नं. 4116, कसेरू वालान, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, सम्पर्क : 23587079

सी 0-2/16, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-110035

कॉलेज कम्पाउन्ड, गीता सोसाईटी, पालनपुर : 385001, गुजरात, सम्पर्क : 02742-258068, 09824968440

जी 97, नेहरु कालोनी, देहरादून (उत्तरांचल), सम्पर्क : 0135-2671643, 09837343560

2 नम्बर, हाईट रोड, लिलुआ, हावड़ा-711204 (कोलकाता)

आभार/Ack. : श्री कल्कि पुराण, ऋग वेद, ऋषि प्रसाद, स्वामी राम सुखदास, नवभारत टाइम्स

योगेश प्रकाश गुप्ता, दिल्ली द्वारा प्रकाशित व अन्य बालकों के ज्ञानवर्धन हेतु

Regd. Office : 1903, 1st Floor, Chandni Chowk, Delhi-6, Tel.: 23973383

श्री कल्कि बाल वाटिका मासिक पत्रिका

के सदस्य बनने हेतु सम्पर्क करें—

☎9312533445, 9968066625, 9968314876

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 120/- रुपए मात्र

न करने का न करवाने का झंझट बस फोन करते रहें जब तक काम पूरा न हो

मंदिरों में भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति, पोशाक, लाईट प्रभारी : हर्षित गुप्ता, अंकित गड़ौदिया, अक्षय गड़ौदिया-9999885277

Regd. Office : 1903, 1st Floor, Chandni Chowk, Delhi-6, Tel.: 23973383